International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—2

शोध पत्र- शिक्षा

Oct-Nov—2009

उज्जैन नगर के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालक...बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर मध्यान भोजन से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

*डॉ. अल्पना वैद्य

*सहायक प्राध्यापक, शिक्षा महाविद्यालय, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

प्रस्तावना : 'मध्यान्ह भोजन' की अवधारणा का अभ्युदय वस्तुतः ि ाक्षा के लोक व्यापीकरण हेतु बालक–बालिकाओं को विद्यालय में प्रवे ा एवं निरंतर उपस्थिति के लिए आकृश्ट करना रहा है ताकि बच्चे भोजन के आकर्शण से विद्यालय में प्रवे ा ले तथा निरंतर अपनी उपस्थिति बनाये रखे। लोकव्यापीकरण आंदोलन के दौरान इस बात पर विचार किया गया कि अधिकां ा बच्चे विद्यालय में प्रवे ा लेने हेतु इस कारण से नहीं आ पाते है क्योंकि वे गरीब व मजदूर वर्ग के लोगों के परिवारों से आते है जहाँ माता–पिता प्रातः भोजन बनाकर बच्चों को भी अपने साथ काम पर साथ ले जाते है ताकि बच्चे दोपहर का भोजन उनके कार्यस्थल पर ही कर सके।

इस कारण बच्चों को इस वर्ग के लोग न तो प्रवे ा दिलाते है और यदि प्रवे ा दिला भी दिया तो नित्य विद्यालय नहीं भेज पाते क्योंकि छोटे बच्चों को दोपहर में भोजन करने की आदत होने से वे माता–पिता के साथ उनके कार्यस्थल पर ही रहना चाहते है ताकि वहाँ वे उनके साथ अपना दोपहर का भोजन कर सके इसलिए विद्यालयों में प्रवे ा भी उपयुक्त नहीं हो पाते और न प्रवे ाी बालक विद्यालयों में निरंतर उपस्थिति दे पाते है। आदिवासी, क ाि मजदूर एवं सामान्य मजदूरी करने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या का अधिकां ा प्रति ात इस श्रेणी में पाया गया। अस्तु मध्यप्रदे ा भाासन ने लोकव्यापीकरण की योजना को सफल बनाने की दृश्टि से प्रवे ा एवं उपस्थिति संख्या में वृद्धि करने हेतु मध्यान भोजन के प्रावधान का प्रचलन विद्यालयों में प्रारंभ किया ताकि अभिभावक इस जानकारी के उपरांत अपने अधिकां ा बच्चों को प्रवे ा दिलायें तथा भोजन के आकर्शण के कारण उनकी दैनिक उपस्थिति नियमित बनायें। मध्यान भोजन लागू करने के बाद प्रवे ा और उपस्थिति दोनों में अभिवृद्धि हो सके और भारत सरकार द्वारा संविधान में अंर्तभूत प्रावधान 'प्रत्येक नागरिक को ि ाक्षा' की मं ाा पूर्ण हो सके ताकि ि ाक्षा के लोकव्यापीकरण की संकल्पना सफल हो सके।[1] यद्यपि मध्यान भोजन दिये जाने में भाासन, अध्यापक, प्र ाासन को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है जैसे भाासन द्वारा प्रति बच्चे पर औसत व्यय अपर्याप्त होना, दलिया, गेहूँ, सब्जी दाल व अन्य खाद्य पदार्थों का भाुद्ध न मिल पाना, ि ाक्षकों द्वारा भोजन बनाने व परोसने में भााला समय के लिए पर्याप्त घंटों का न मिल पाना भााला विकास समिति सदस्यों द्वारा खाने की गुणवत्ता की ि ाकायतें करना, विद्यालय में पढ़ाई के स्थान पर भोजन में ही ि ाक्षकों का अवधान केंद्रित होना आदि।

यद्यपि वर्तमान में भाासन द्वारा समिति व एन.जी.ओ. के सहयोग से भोजना बनवाना व परोसे जाने की सुधार प्रक्रिया के बाद भी विद्यालय का समय तो नि ि चत रूप में बर्बाद होता ही है साथ ही कभी–कभी भोजन के कच्चेपन व गुणवत्ता में कमी दिखाई देती है। भोजन बनाने में लापरवाही के कारण कभी–कभी कहीं–कहीं भोजन में कीटाणु, छिपकली, कंकड़ व कचरा आदि भी निकलना, बेस्वाद भोजन बनना, लोगों द्वारा ि ाकायतें मिलना कि भाासन द्वारा प्रति छात्र दी जाने वाली रा ि ा का पूरा लाभ छात्रों को न मिल पाना आदि भी मध्यान भोजन की कमिया हैं जो इसकी आलोचना को प्रतिबिम्बित करती है। इस सबके बावजूद भी मध्यान भोजन मध्यप्रदे ा भाासन द्वारा सतत रूप में दिया जा रहा है और छात्र–छात्राएं इसका लाभ प्राप्त कर रहे है।[2] मध्यान भोजन के कारण भााला में अध्ययन कार्य के प्रभावित होने के कारण यह धारणा उभर कर आई है कि मध्यान भोजन के कारण ि ाक्षक छात्रों को लगभग आधे समय तक ही पढ़ा पाते है। भााला का आधा समय मध्यान भोजन में ही व्यतीत होता हे। इस कारण छात्रों का सीखना प्रभावित होता है जिसका सीधा प्रभाव उनके उपलब्धि स्तर पर पड़ता है। उनके उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का संज्ञान

इस दृश्टि से भी महत्वपूर्ण है कि वस्तुतः मध्यान भोजन f क्षा जगत के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छोटे बच्चों के लिए उनके उपलब्धि स्तर को सकारात्मक अथवा नकारात्मक दृश्टि से किस सीमा तक प्रभावित करता है। जब तक इस तथ्य का स्पश्ट चित्र उभर कर प्रत्यक्षीभूत नहीं होता है तब तक मध्यान भोजन व विद्यालयीन समय की प्रक्रिया के बीच सही तालमेल स्थापित कर पाना संभव नहीं होगा। तथ्य के स्पश्टीकरण के उपरांत ही सुधार के मार्गों की प्र ास्ति होती है। नैदानिक दृश्टि से भी यह अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है।[3]

समस्या से संबंधित पूर्व अनुसंधान– 1. 'आंगनवाड़ी केंद्र में प्रदत्त पोशण आहार का गर्भवती महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।' रिसर्च लेख सुश्री मंजुकुमारी एवं डॉ. मंजु भार्मा Research Link 65 Vol –VIII (6) August 2009 130-131 Indore 2. सिंह वाणी पाणी (1988) ग्रामीण स्वास्थ्य संरक्षण प्रका ाक वी.के. तनेजा क्लासीकल पब्लि िंग कंपनी 28 भॉपिंग सेंटर, करमपुर, नईदिल्ली 3. कुलकर्णी ज्योति (1988) 'सामान्य एवं उपचारात्मक पोशण' प्रका ान एस.एल. सिंघल द्वारा f ावा प्रका ान 423, खजूरी बाजार, इंदौर 4. गायत्री देवी (1994) ग्रामीण परिवारों में स्वास्थ्य का सामाजिक वैज्ञानिक अध्ययन। 5. आँगनवाड़ी कार्यत्रियों हेतु कार्य प्रि क्षण मॉड्यूल एवं संदर्भ पुस्तिका (आई.सी.डी.एस.) 2005 प्रका ाक भवन विधान लखनऊ उत्तर प्रदे ा।

समस्या का औचित्य –'मध्यान भोजन का विद्यालयों में नियमितीकरण दो विभिन्न अनुभवों का संकेत देता है। प्रथम अनुभव अंतर्गत छात्र–छात्राओं का विद्यालयों के प्रति लगाव होना, नियमित उपस्थिति होना प्रतिवर्श प्रवे ा दर में व द्धि बच्चों को पोशक आहार मिलना ताकि भारत के भावी नागरिक स्वस्थ और स जन ाील मस्तिश्क के नागरिक बन सकें और भारतीय संविधान की उस मं ाा की पूर्ति हो सके जिसमें प्रत्येक नागरिक को f ाक्षित करने का दायित्व भारत सरकार द्वारा पूरा किया जाता है। द्वितीय अनुभव यह द ार्ता है कि मध्यान भोजन के कारण f ाक्षकों का सारा ध्यान बच्चों को भोजन बनाने परोसने व खिलाने में व्यतीत होने के कारण कक्षाओं में नियमित अध्यापन नहीं हो पाता जिसके कारण बालकों की भौक्षिक उपलब्धि स्तर आ ातीत नहीं हो पाती। विद्यालयों की अन्य भौक्षिक गतिविधियाँ भी व्यवस्थित रूप में संचालित न हो पाने से पालकों का संतुलित विकास नहीं हो पाता जो वस्तुतः विद्यालय का प्रमुख उद्दे ाय है। इन दो विरोधाभासी विचारों के कारण इस बिंदु पर अनुसंधान इसलिये आव ायक है ताकि यह ज्ञात हो सके कि क्या मध्यान भोजन दिये जाने वाले विद्यालयीन छात्र–छात्राओं का उपलब्धि स्तर मध्यान भोजन न दिये जाने वाले विद्यालयीन छात्र–छात्राओं की तुलना में उनके उपलब्धि स्तर को कितना प्रभावित करता है। इसी अवधारणा की स्पश्ट सत्यता की जानकारी हेतु प्रस्तुत समस्या अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण होकर नितांत औचित्यपूर्ण है।

समस्या के उद्देश्य – 1. यह जानना की पोशक आहार के कारण विद्यालयों की प्रवे ा दर में अभिव द्धि हुई है। 2. यह ज्ञात करना कि पोशक आहार के कारण गरीब मजदूरों द्वारा अपने बच्चों को अपने साथ काम पर ले जाना बंद करके उन्हें विद्यालयों में प्रवे ा दिलाने व उनकी नियमित उपस्थिति हेतु अभिप्रेरित किया है। 3. यह जानकारी प्राप्त करना कि नियमित भोजन के कारण बालकों की नैसर्गिक भूख त प्त होने से उनका मन पढ़ाई में लगता है और वे सीखने में अपनी उपलब्धि स्तर को उदत्त द ाति है।

परिकल्पना –1. मध्यान भोजन के कारण बालकों की भौक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है। 2. मध्यान भोजन के कारण छात्र–छात्राओं का अध्ययन प्रभावित नहीं होता है। 3. मध्यान भोजन के कारण कक्षा के लगने वाले पीरियड्स पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अनुसंधान प्रकृति –प्रायोगिक **सीमांकन** –उज्जैन भाहर के 12 प्राथमिक विद्यालय उनमें 6 विद्यालय वे जिनमें मध्यान भोजन का प्रावधान रहा है तथा 6 वे जिनमें मध्यान भोजन का प्रावधान नहीं है – 1 त्रिपाठी राजे ा 'प्राथमिक विद्यालयों में मध यान भोजन' समीक्षात्मक भौक्षिक पत्रिका 'f क्षा समीक्षा' जय भारती प्रका ान 2007 पृ.क्र. 21–22 2 झालानी सरोज 'मध्यप्रदे ा राज्य में मध्यान भोजन' भौक्षिक लेख, नईदुनिया, 17 सितम्बर 2007 पृ.क्र. 6–7 3 झा आनंद ांकर 'पो ाक आहार और f क्षा' ' ौक्षिक लेख पत्रिका', 'f क्षा की नई दि ाा' मनोज प्रका ान हरिद्वार, 2004 पृ.क्र. 17 – 19

मध्यान भोजन प्रावधानित प्राथमिक विद्यालय	मध्यान भोजन न दिये जाने वाले प्राथमिक विद्यालय
1.भा.बालक प्रा.वि. जालसेवा निकेतन,उज्जैन	1.भारतीय ज्ञानपीठ प्रा.वि., उज्जैन
2.भा.बालक प्रा.वि. नईपेठ उज्जैन	2. वर्जिनमैरी प्रा.वि. फ्रीगंज, उज्जैन
3.भा. बालक प्रा.वि. नयापुरा, उज्जैन	3. स्टेडी होम प्रा.वि. फ्रीगंज, उज्जैन
4.भा. नूतन कन्या प्रा.वि. उज्जैन	4.स्टेनफोर्ड कन्या प्रा.वि. इंदौर रोड,उज्जैन
5.भा. द हरा मैदान कन्या प्रा.वि.उज्जैन	5.कालिदास कन्या प्रा.वि. फ्रीगंज, उज्जैन
6.भा.कन्या प्रा.वि. नागझिरी, उज्जैन	6.कन्या पब्लिक प्रा.वि., उज्जैन

न्यादर्श –1. 3 कन्या प्राथमिक विद्यालय व 3 बालक प्राथमिक विद्यालयों के कुल 6 प्राधानाध्यापक। 2. 3 कन्या प्राथमिक विद्यालय व 3 बालक प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन करने वाली 15 f ाक्षिकाएं व 15 f ाक्षक कुल 30 f ाक्षक। 3. 6 प्राथमिक विद्यालयों के 5–5 भााला विकास समिति के सदस्यगण कुल 30 सदस्य। 4. भााला में पढ़ने वाले बालाकों के 200 पालक। 5. 3 कन्या प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन 150

बालिकाएं व 3 बालक प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 150 बालक अर्थात् कुल योग 300 छात्र–छात्राएं। 6. उज्जैन जिले का जिला ि क्षा अधिकारी 01 ।

आकल्प विधा : 1. इस अनुसंधान में दो समूह लिये गये हैं। प्रथम समूह उन विद्यालयों का जिनमें मध्यान भोजन दिया जाता है। द्वितीय समूह उन विद्यालयों का जिनमें मध्यान भोजन नहीं दिया जाता है। दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की विभिन्न विशयों का उपलब्धि स्तर ज्ञात कर तुलना की गई। तुलना करने पर जो परिणाम प्राप्त हुए उन्हें तालिका द्वारा द ार्या जाकर उनका वि लेशण किया गया। 2. मध्यान भोजन के कारण छात्र–छात्राओं का अध्ययन प्रभावित होता है इस हेतु संबंधित विद्यालयों के प्रधानाध्यापक ि क्षक भाला समिति के सदस्य, पालक, छात्र–छात्राएं एवं जिला स्तर के एक प्र ाासनिक अधिकारी के अभिमत लिये जाकर निश्कर्श निकाले गये। ये निश्कर्श भी तालिका के माध्यम से द ार्कर वि लेशित किये गये। 3. मध्यान भोजन के कारण कक्षा के लगने वाले पीरियड्स प्रभावित होते है अथवा नहीं इस तथ्य की जाँच हेतु भी संबंधित विद्यालयों के प्राधानाध्यापक, ि क्षक, भाला समिति के सदस्य पालक एवं छात्र–छात्राओं के अभिमत लिये जाकर प्रदत्तों का प्रद र्न तालिका द्वारा किया जाकर तत्संबंधी वि लेशण किया गया।

सांख्यिकी प्रविधि –प्रति ात प्रविधि –प्रदत्तों का सारणीयन एवं वि लेशण –

परिकल्पना क्रमांक – 1

सारिणी क्र. 1

मध्यान भोजन एवं गैर मध्यान भोजन वाले प्राथमिक विद्यालयों के बालक–बालिकाओं का विद्यालयीन पाठ्यक्रम में प्रचलित विशयों में उपलब्धि स्तर

स. क्र.	प्रा.वि.पाठ्यक्रम के विशय	उपलब्धि प्राप्तांक	मध्यान भोजन वाले विद्यालयीन छात्र–छात्राओं का उपलब्धि प्रति ात		गैर मध्यान भोजन वाले विद्यालयीन छात्र–छात्राओं का उपलब्धि प्रति ात		तुलनात्मक उपलब्धि स्तर प्रति ात में अंतर	
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं
1	हिंदी/अंग्रेजी/संस्कृत	100	60	69	80	82	20	13
2	गणित	100	48	52	78	80	30	28
3	सा.वि./सा.वि.	100	56	60	70	74	14	14
4	खेलकूद / चित्रकला	100	80	84	88	84	08	00
5	भारीरिक साफ सफाई/ स्वच्छता एवं कार्यानुभव	100	79	84	90	92	11	08
		500	64.60	69.80	81.20	82.40	16.60	12.60

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी और मध्यान भोजन न मिलने वाले विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का उपलब्धि स्तर मध्यान भोजन मिलने वाले विद्यालयों के छात्र छात्राओं के उपलब्धि स्तर की तुलना में क्रम ाः 20 प्रति ात छात्रों और 13 प्रति ात छात्राओं का अधिक रहा। इसी प्रकार गणित में भी 30 प्रति ात छात्रों का 28 प्रति ात छात्राओं का अधिक रहा। सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन में यह अंतर क्रम ाः 14 प्रति ात छात्रों एवं 14 प्रति ात छात्राओं का अधिक रहा। खेलकूद /चित्रकला में यह अंतर छात्रों में 8 प्रति ात व छात्राओं में 0 प्रति ात रहा। भारीरिक साफ सफाई/ स्वच्छता एवं कार्यानुभव में 11 प्रति ात छात्रों का व 8 प्रति ात छात्राओं का अधिक पाया गया।

उक्त पूरे परिदृ य में मध्यान भोजन वाले विद्यालयों की तुलना में गैर–मध्यान भोजन वाले विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का औसत उपलब्धि स्तर क्रम ाः 16.60 एवं 12.60 प्रति ात अधिक पाया गया है जो मध्यान भोजन की प्रभाव ाीलता को उपलब्धि हेतु महत्वपूर्ण नहीं स्वीकारता।

परिकल्पना क्रमांक – 2

सारिणी क्र. 2

मध्यान भोजन के कारण छात्र–छात्राओं का अध्ययन प्रभावित नहीं होता है

स. क्र.	किस वर्ग के अभिमत लिये गये	अभिमत वर्ग की सदस्य संख्या	सदस्यों के अभिमत का प्रति ात				छात्र–छात्राओ के अध्ययन प्रभावित न होने संबंधी कुल प्रति ात
			अध्ययन प्रभावित नहीं होता अभिमतधारियों की संख्या	प्रति ात	अध्ययन प्रभावित होता है अभिमतधारियों की संख्या	प्रतिशत	
1	प्रधानाध्यापक	06	04	67	02	33	67
2	िक्षक	30	16	53.33	14	46.66	53.33
3	भाला समिति के सदस्यगण	30	13	43.33	17	56.66	43.33
4	पालक	200	90	45	110	55	45
5	छात्र–छात्राएं	300	170	56.66	130	43.33	57
6	प्र ाासनिक अधिकारी	01	1	100	0	00.00	100
			294	**365.32**	**273**	**234.65**	**365.66**

सरिणी के उक्त पूरे इस परिद य के प्रति ातों का योग देखा जाये तो स्पश्ट होता है कि 234.65 प्रति ातों की तुलना में 365.32 प्रति ातों ने स्वीकारा है कि कार्य प्रभावित नहीं होता है। वस्तुतः यद्यपि प्रत्यक्ष रूप में कार्य प्रभावित न होना ही सत्य है किन्तु अप्रत्यक्ष रूप में 234.65 प्रति ात प्रदत्त नकारात्मक स्वीक ति हेतु कम प्रति ात नहीं है। अस्तु इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिये कि कार्य प्रभावित हो रहा है। सारिणी के उक्त प्रति ातों के जोड़ के प्रदत्तों को देखने से भसित है कि 349.99 प्रति ात ने पीरियड्स पर कोई प्रभाव पड़ना नहीं माना जबकि 150 प्रति ात योग नेंपीरियड्स पर प्रभाव पड़ना माना है। वस्तुस्थिति में समग्र योग को देखते हुए स्पश्ट है कि पीरियड्स प्रभावित होने के पक्ष में मतों का आधिाक्य होने से ही सर्वमान्य मत कहे जायेंगे, किन्तु 150.01 प्रति ात अभिमत को भी अस्वीकारना बुद्धिमत्ता नहीं होगी। इस पर पुनः अनुसंधान की आव यकता है।

परिकल्पना क्रमांक – 3

सारिणी क्र. 3

मध्यान भोजन के कारण कक्षा में लगने वाले पीरियड्स पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है

स. क्र.	किस वर्ग के अभिमत लिये गये	अभिमत वर्ग की संदस्य संख्या	सदस्यों के अभिमतों का प्रति ात				कक्षा पीरियड्स पर प्रभाव न होने संबंधी प्रति ात योग
			प्रभाव नहीं पड़ता सदस्य संख्या	प्रति ात	प्रभाव पड़ता है सदस्य संख्या	प्रति ात	
1	प्रधानाध्यापक	06	5	83.33	1	16.67	83.33
2	िक्षक	30	25	83.33	5	16.67	83.33
3	भाला समिति के सदस्य	30	19	63.33	11	36.67	63.33
4	पलक	200	100	50.00	100	50	50.00
5	छात्र–छात्राएं	300	210	70.00	90	30	70.00
		566	**359**	**349.99**	**207**	**150.1**	**349.99**

निश्कर्श –1. मध्यान भोजन दिये जाने वाले विद्यालयों में बालक–बालिकाओं की उपलब्धि प्रति ात स्तर की तुलना में मध्यान भोजन न दिये जाने वाले बालक–बालिकाओं के उपलब्धि स्तर प्रति ात प्राप्तांक अधिक होने से यह निश्कर्श निकला है कि मध्यान भोजन दिये जाने वाले विद्यालयों की तुलना में मध्यान भोजन न दिये जाने वाले विद्यालयों के बालक बालिकाओं का उपलब्धि स्तर प्रति ात प्राप्तांक ज्यादा उदात्त एवं ज्यादा श्रेयस्कर है। छात्र–छात्राओं के तुलनात्मक उपलब्धि प्रति ात प्राप्तांकों में भी छात्राओं के उपलब्धि प्राप्तांक अधिक होने से यह स्पष्ट है कि छात्रों की तुलना में छात्राओं का अध्ययन के प्रति सुझाव एवं रूचि अधिक है। गैर मध्यान भोजन वाले विद्यालयीन बालक बालिकाओं की औसत उपलब्धि स्तर का प्रति ात अधिक उदात्त परिलक्षित होने से परिकल्पना असत्य सिद्ध हुई है। 2. प्रधानाध्यापक िक्षक भााला समिति के सदस्यों, पालकों, छात्र–छात्राओं एवं प्र ाासनिक अधिकारियों के सम्मिलित योग प्रदत्तों ने अध्ययन प्रभावित नहीं होने को ज्यादा वरीयता दी है, अस्तु परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई है। 3. प्रधानाध्यापकों, िक्षकों, भााला समिति सदस्यों, पालकों बालकों एवं प्र ाासनिक अधिकारियों के अभिमतों के प्रति ात अभिमतों के योग को देखते हुए यह परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई है कि मध्यान भोजन के कारण भाालाओं में लगने वाले पीरियड्स पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सुझाव : 1. अच्छे, गम्भीर और ध्यान देने वाले िक्षकों की नियुक्तियाँ विद्यालयों में की जानी चाहिये व समय–समय पर निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण भी श्रृंखलाबद्ध तरीकों से किये जाने चाहिये ताकि उपलब्धि प्रति ात के प्रदत्तों में अभिवृद्धि हो सके। 2. छात्राओं की तुलना में छात्रों का उपलब्धि स्तर न्यून होने के कारणों की खोज की जानी चाहिये व तत्संबंधी निदानात्मक िक्षण से छात्रों को अभिसिंचित किया जाना चाहिये ताकि छात्रों की उपलब्धि स्तर प्रति ात अभिवृद्धि की ओर अग्रसर हो सके। 3. छात्रों की पढ़ाई लिखाई मध्यान भोजन के कारण कितनी प्रभावित हो रही है इसका आंकलन समय–समय पर किये जाने वाले निरीक्षण पर्यवेक्षण एवं इकाई परीक्षा लेने के परिणामों की परंपरा प्रचलन को स ाक्त बनाना उचित होगा। 4. ग्राम पंचायत यह देखें कि मध्यान भोजन हेतु अध्यापक कितने बजे बच्चों को छोड़ते है व कितने बजे भोजनोपरांत पुनः पीरियड्स लगाते है व रोजाना कुल कितने पीरियड्स में अध्यापक बच्चों की उपस्थिति लेते हुए उन्हें पूरे मनोयोग से पढ़ाते है। सतत् निरीक्षण की परंपरा ही इस समस्या का उपयुक्त समाधान दे सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. तिवारी आदित्य नारायण 'ि ाक्षा मनोविज्ञान' प्रका ान – उत्तरप्रदे [illegible] हिन्दी ग्रंथ अकादमी लखनऊ, 1974. 2. माथुर एस.एस. 'ि ाक्षा मनोविज्ञान' प्रका ान [illegible] विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 2003. 3. यादव एम.एस., लक्ष्मी टी.के.एस. 'कन्सैप्चुअल इन्पुट्स फॉर सेकेंड्री टीचर्स एज्यूके ान इन दि इंस्ट्र [illegible] नल सेल' प्रका ान – एनसीईआरटी, नईदिल्ली 2003. 4. रमनबिहारीलाल 'ि ाक्षा के दा ार्निक एवं समाज भाास्त्रीय सिद्धांत' प्रका [illegible] कि – रस्तोगी पब्लिके ान्स, मेरठ (नौवां संस्करण) 1998–99. 5. नायक जे.पी. 'एलीमेंट्री एज्यूके ान इन इंडिया' प्रका ान – एि ायां पब्लिके ान हाउस बाम्बे, नई दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, लंदन, न्यूयार्क 1965. 6. [illegible] पुस्तक मंदिर आगरा – 2, 2005–2006. संदर्भित पत्र पत्रिकाओं की सूची 1. परिप्रेक्ष्य – भौक्षिक योजना एवं प्र ाासन का सामाजिक आर्थिक संदर्भ संपादन सोमदत्त दीक्षित प्रका ान–राष्ट्रीय भौक्षिक योजना एवं प्र ाासन संस्थान 17वीं श्री अरविन्दो मार्ग नई दिल्ली 110016. 2. पर्यावरण त्रैमासिक – संपादन डॉ. एम.ए. हक निदे ाक प्रका ान भारत सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय नई दिल्ली. 3. समीरा मासिक – संपादन श्रीमती कौ ाल्या गाँधी प्रका ान – डी.के. 03 / 229 / 2 कोलार रोड भोपाल 4. यू.जी.सी समाचार – प्रका ान सचिव वि.वि. अनुदान आयोग बहादुर भााह जफर मार्ग नई दिल्ली 110002 5. ि ाविरा – [illegible]